औरतों की बदलती तस्वीर

सुहास कुमार

यह सच है कि महिला आंदोलन व महिलाओं में जागरूकता फैलाने की कोशिशों के बावजूद आम महिलाओं की स्थिति में खास बदलाव नहीं दिखता है। महिलाओं पर घर व बाहर हिंसा बढ़ती ही जा रही है। लेकिन सच्चाई यह भी है कि महिलाएं चार-दिवारी से बाहर कदम रख चुकी हैं। उनके मन में नई उमंगे जाग उठी हैं। पति-परमेश्वर के मायने बदल गए हैं। वे अपने मान-सम्मान की बात सोचने लगी हैं। हिंसा, यौनिक हिंसा के ज्यादा मामले प्रकाश में आना इस बात का सूचक है कि वे अब अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने लगी हैं। खामोशी से जुल्म सहना उन्हें मंजूर नहीं है।

बाहरी दुनिया में भी अब महिलाएं हाशिए से निकलकर मुख्य धारा में आ गई हैं। सरकारी या गैर-सरकारी दफ्तरों और बैंकों में महिलाओं का प्रतिशत दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है। कामकाजी महिलाओं की संख्या बढ़ने के साथ-साथ उनके कामकाज के क्षेत्र में भी बहुत विस्तार हुआ है।

हमें ग्रामीण व शहरी इलाकों से सक्रिय संगठनों व कार्यकत्ताओं की कई रपटें व अनुभव प्राप्त हुए हैं। बहुत सी हिम्मती महिलाएं हैं जिन्होंने दुखों व कष्टों को अपनी किस्मत मानकर स्वीकार नहीं किया है, अपने हालातों से जूझकर नए रास्ते निकाले हैं।

आइए, देखें बदलाव कहां-कहां आया है।

दहेज़ लोभियों से छुटकारा

एक साधारण परिवार की लड़की रमा की शादी 18 वर्ष की उम्र में हो गई। शादी के छः महीने बाद ही उस पर दहेज कम लाने के लिए जुल्म होने लगे। उसने मायके चिट्ठी लिखी। उस पर बांझ होने का आरोप भी लगाया गया। मायकेवालों ने पंचायत बुलाई। पंचायत ने डाक्टरी जांच का आदेश दिया। रमा पूर्ण स्वस्थ पाई गई। रमा ससुराल वापस गई। पंचायत के लिखित आदेश के बावजूद कि उसे अब तंग नहीं किया जाएगा, उसको पीड़ित किया जाना बंद नहीं हुआ। उसे ज़हर तक पिलाने की कोशिश की गई।

रमा मायके आ गई। घर में उस पर ससुराल वापस जाने के लिए बहुत दबाव डाला गया। रमा ने महिला-मंडल की मदद ली। रमा के भेजे पत्र, पंचायती फैसले की कापी, डाक्टरी जांच प्रमाण पत्र, सभी कागज़ों की फाइल बनाकर ज़िला पुलिस अधीक्षक, सोलन (हि.प्र.) के सामने केस रखा गया। एक हफ्ते के भीतर रमा के पति और ससुर को गिरफ्तार कर लिया गया। दहेज़ का सारा सामान रमा को वापस मिल गया। अब रमा सुख-शांति से अपने मां-बाप के साथ रह रही है।

राधा ने नए सिरे से ज़िंदगी शुरू की

राधा एक साधारण परिवार की किंतु बी.ए. पास युवती है। वह नौकरी करना चाहती थी पर घरवालों के दबाव के कारण उसे ब्याह करना पड़ा। ससुराल में पति व ससुर थे। उनके व्यवहार में उसके प्रति कोई शालीनता नहीं थी। उल्टे उसके पढ़े-लिखे होने पर ताना दिया जाता।

राधा के ससुर अचानक एक दिन एक महिला को ले आए और कहा कि यह तेरी सास है। एक दिन उनकी शह पाकर राधा के पति ने राधा को मारा-पीटा भी। तीन साल तक राधा जुल्म सहती रही। समझौते की कोशिश की, लेकिन कब तक सहती। ससुराल छोड़कर मायके आ गई। जल्दी ही पिता की मृत्यु हो गई। उसने नौकरी तलाश की। उसे मां का पूरा सहारा व सहयोग मिला। उसे नौकरी भी मिल गई और वकील की मदद से पति से तलाक भी। वह नए सिरे से ज़िंदगी की शुरुआत करके खुश है।

(केस रपट-सूत्र संस्था, हि. प्र.)

प्रौढ़ शिक्षा का बीड़ा उठाया है उर्मिला ने

दुर्ग जिले (मध्य प्रदेश) के दुधली गांव में रहती हैं श्रीमती उर्मिला मिश्रा। कक्षा 8 तक पढ़ी हैं। 41 साल उम्र है। अभी एक साल पहले तक सिर्फ घर-गृहस्थी संभालती थीं। एक साल पहले जब गांव में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम शुरू हुआ उसमें भाग लेने को आगे आईं। अपने विकासखंड के सब पुरुष प्रेरकों के बीच वह एक अकेली महिला प्रेरक हैं। यही नहीं, महिलाओं को शिक्षित व जागरूक बनाने में पूरी तरह लगी हुई हैं। गांव-गांव घूमकर शिक्षा का संदेश पहुंचाने के लिए उन्होंने साइकिल चलाना सीखा। कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी भाग लिया है। एक महिला मंडल का गठन किया है।

सरकारी कार्यक्रम खत्म हो चुका है, लेकिन उनका घर इन तमाम क्रियाओं का केंद्र बना हुआ है। गांव की लड़कियां व महिलाएं वहां पढ़ने आती हैं। रामायण का पाठ भी किया जाता है। महिला मंडल की बैठकें होती हैं। चर्चा चलती है। एक पुस्तकालय भी खोला गया है। गांव की महिलाएं पंचायत भवन न जाकर उनके घर जाना पसंद करती हैं। उन्हें सब गांववालों का विश्वास प्राप्त है। उर्मिला को पति का सहयोग मिला हुआ है। उनके पति ने भी प्रौढ़ शिक्षा की कक्षाएं रात में लेनी शुरू की हैं।

(श्री मनीष वर्मा से प्राप्त रपट)

हालातों से जूझती पूनम

मेरठ में रहने वाली 28 वर्षीय पूनम के पति की मृत्यु हो गई। साथ में एक नन्हीं बच्ची व 7 साल का बेटा। घर में मां व बहनें। आमदनी का कोई साधन नहीं। पूनम ने हिम्मत नहीं हारी। आमदनी के लिए उसने अखबार बांटने का धंधा शुरू किया। 'हॉकर' यूनियन ने कड़ा विरोध किया। नाते रिश्तेदारों ने ताने कसे। उसने सभी विरोधों का डटकर सामना किया।

उसका कहना है कि अखबार बांटने से इतनी कमाई हो जाती है कि घर का व बेटे की पढ़ाई का खर्च आसानी से चल जाता है। किसी की गुलामी सहने व भीख मांगने की बजाए उसने यह रास्ता चुनकर और महिलाओं के लिए एक नया रास्ता खोला है।

(स्रोत-उत्तरा)

हिम्मती शीला

महाराष्ट्र के एक गांव की बात है। दलित वर्ग की शीला का प्रेम एक मुसलमान युवक से हो गया। वह शादीशुदा है। शीला गर्भवती हो गई। मां है नहीं। पिता व भाई ने लड़की के पेट पर लात मारकर गर्भ गिराने की कोशिश की किंतु असफलता मिली। उसने एक लड़के को जन्म दिया। शीला ने तय किया उसे न तो शादी की ज़रूरत है और न ही और बच्चों की। उसने नसबंदी करा ली। अब मज़दूरी करके मां-बेटे खुशी से रह रहे हैं।

(स्रोत-महिला मंच, म.प्र.)

विकास कार्यों में लगी सविता

दक्षिणी राजस्थान के डूंगरपुर ज़िले के दूर दराज़ गांव की सविता कक्षा 5 में पढ़ रही थी जब उसकी शादी हो गई। पति ने गौना कराने आने से इंकार कर दिया। उसको तलाक़ मिल गया। कुछ दिन उसने नर्स का काम किया। फिर वह नौकरी छूट गई। इस बीच वह ज्यादातर मायके ही रहती रही। पति की मृत्यु हो गई। फिर कुछ दिन ससुराल में भी रही । सविता ने सोचा—'अगर पीहर व ससुराल में सहारा नहीं मिल रहा तो क्यों न अलग रहकर ज़िंदगी बनाएं।'

उसे एक स्वैच्छिक परियोजना में 200 रु. माह पर नौकरी मिल गई। आज सविता स्वतंत्रता से रहती है। उसने डूंगरपुर एकीकृत परती भूमि विकास योजना में ग्राम स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त किया है और वह गांव में उत्प्रेरिका के रूप में काम कर रही है।

(इन्दु उपाध्याय, 'पिडो' संस्था)

साहसी विमल

महाराष्ट्र के चंद्रपुर ज़िले के विरम गांव की विमल एक धनी परिवार की लड़की थी किन्तु ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थी। ब्याह भी अच्छे खाते-पीते घराने में हुआ। दो साल बाद ही पति को लकवा मार गया। विमल पर सारे घर के काम-काज का बोझ आ गया। विमल के एक बेटी थी। बेटी को कान्वेंट स्कूल में भेजने का खर्चा देने को ससुराल वाले तैयार नहीं थे।

वह ससुराल से अलग रहने लगी। पहले स्वयं कपड़े सिल कर बेचती थी। फिर दो-तीन लड़कियां रखकर रोज़गार बढ़ा लिया। आज बेटी को डाक्टरी पढ़ा रही है।

(मृदुला दोषी)

नई राहें

बंगलौर के पास जलहल्ली में वायुसेना के तकनीकी कॉलेज में 22 पुरुषों के साथ 25 युवतियों को पायलट अफसर के रूप में प्रशिक्षित किया जा रहा है। महिला इंजीनियरों का यह समूह जगुआर व मिग जैसे हवाई जहाज़ों की जांच व मरम्मत का काम करेगा। महिलाओं के लिए एक नई राह खुली है।

थल सेना व नौसेना में भी अब महिलाएं जाने लगी हैं। उनको पुरुषों द्वारा लिए गए सभी प्रशिक्षण व शारीरिक व्यायाम करने होते हैं। सभी समान परीक्षाओं से गुज़रना होता है। डाक्टर, इंजीनियर, वकील, प्रशासनिक अधिकारी, बैंक व सरकारी नौकरियां, महिला उद्योगकर्मी—कोई भी क्षेत्र लें, महिलाओं का प्रतिशत तेज़ी से बढ़ रहा है।

नये पंचायतीराज क़ानून में महिलाओं के लिए आरक्षण से गांव स्तर पर उनके लिए राजनीति का दरवाज़ा भी खुल गया है। इससे नीति बनाने की प्रक्रिया में महिलाओं की भी भागीदारी होगी।

कहने का मतलब है अब महिलाओं के लिए मौके व विकल्प बढ़ रहे हैं। धीरे-धीरे उन्हें सहारा व बल देने वाला ढांचा विकसित हो रहा है। लड़की का मायके में अधिकार, माता-पिता आदि का सहारा व महिला संगठन का सहारा, यह दो महत्वपूर्ण तंत्र हैं जिन्हें और विकसित करने की ज़रूरत है। पुरुष तो पुरुष, स्वयं महिलाएं ही कहती हैं कि औरत औरत की दुश्मन है। क्यों न हम एक दूसरे का सहारा बनने की कोशिश करें? क्यों न हम स्वयं अपने में सम्मान का पात्र बनें? □